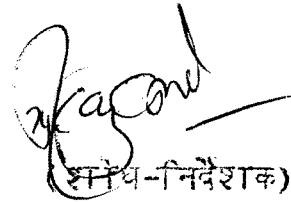


डॉ. गो. रा. कुलकर्णी,
निवृत्त रीडर एवं अध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
श्रीमती मधुबाई गरवारे कन्या
महाविद्यालय,
सांगली ।

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री रफीक नौदसाहेब अंदोवाले ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल. हिन्दो उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध * उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के शहर में घूमता आईना * उपन्यास का अनुशीलन * मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। इसमें प्रस्तुत विचार एवं विवेचन मेरी जानकारी में मौलिक है। प्रस्तुत शोधकार्य के बारेमें मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।


(सोध-निर्देशक)

सांगली ।

डॉ. गो. रा. कुलकर्णी ।

दिनांक : 23 : 12 : 1998 ।

प्रख्यापन

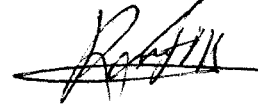
यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल के लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए ^{प्रस्ताव} नहीं की गयी है।

कोल्हापुर।

दिनांक : 23:12:1998।

शोध-छात्र

(रफीक बंदीवाले)



Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur-416 004.

प्राक्कथन

उपेन्द्रनाथ अशक जी आधुनिक हिन्दी साहित्य की गद्यात्मक एवं पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने की दृष्टिसे उनकी अपनी विशेषता उल्लेखनीय है। अशक जी के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी संग्रह, काव्य नाटक, एकांकी, संस्मरण तथा रेखाचित्र आदि कृतियाँ बहुसंख्याक रूप में उपलब्ध होती हैं। साथ ही साथ उनके वैचारिक पक्ष का घोटन कराने वाली भी अनेक स्फुट रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। उन्होंने प्रारंभिक छोटे उपन्यासों के बाद नायक चेतन को लेकर उपन्यासों की शृंखला ही खड़ी कर दी है। इन सभी उपन्यासों में चेतन को ही नायक बनाया है और सभी पात्र तथा घटनाएँ उसे घेर कर ही सार्थक होती हैं। अशक जी ने जिस महागाथा की सृष्टि की है, वह उनके अपने जीवनानुभवों अनुभूतियों पर आधारित है। यह सब लेखक की आत्मकथात्मक जैसा ही लगता है। कुछ ऐसा महसूस होता है कि लेखक चेतन को माध्यम बनाकर अपनी ही जीवन गाथा लिख रहा है। यहाँ अशक ने हिन्दी उपन्यास साहित्य की प्रचलित धारा से हटकर एक नवीन औपन्यासिक जगत का निर्माण किया है। उनकी अपनी स्वयं की अनुभूतियों के साथ-साथ समकालीन जीवन के अत्यन्त सधन, सुदीर्घ एवं चमत्कारी चित्र भी प्रस्तुत हुए हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है --

- १) ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
- २) ग्रंथालय - श्री स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर।
- ३) ग्रंथालय - रा.छ.शाहू महाविद्यालय, कोल्हापुर।

इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों के प्रति मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरा परम माग्य मानता हूँ कि मुझे श्रद्धेय गुरुवर डॉ.गो.रा.कुलकर्णी, जैसे प्रतिभा संपन्न मार्गदर्शक मिले। मेरा यह प्रयास उन्हीं के सहयोग से सफल

बना गया है। आपने अपना गुरुत्व मुझ पर उतना हावी कमी नहीं होने दिया जिससे कि मेरा वैचारिक अस्तित्व दब जाय। इन ऋणों के प्रतिपादन में आमार या धन्यवाद शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना घृष्टता होगी। गुरुवर के पुनोत्तर चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं और क्या कर सकता हूँ? गुरुवर्य डॉ. कुलकर्णी जी की धर्म पत्नी डॉ. अवंतिका कुलकर्णी जी ने भी मुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया। उनके प्रति भी मैं आमार प्रकट करता हूँ।

मेरे गुरुवर्य डॉ. वही.के. मोरे जी के ही आशीर्वाद का फल यह लघु-शोध-प्रबन्ध है। डॉ. मोरे जी से मुझे बार-बार प्रोत्साहन मिलने के ही कारण आज मैं जो भी हूँ और जो कुछ प्राप्त किया है यह सब उनको ही कृपा तथा आशीर्वाद है। कबीर जैसे संत ने भी ईश्वर से पल्लिका मान गुरु को ही दिया है। अंत में मैं यह कहता हूँ कि डॉ. मोरे जी जैसे गुरु तथा मार्गदर्शक मिलने से ही मैं यहाँ तक आ पहुँचा हूँ। गुरुवर्य डॉ. मोरे जी की धर्मपत्नी श्रीमती मोरे जी ने भी मुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया। उनके प्रति भी मैं आमार प्रकट करता हूँ।

प्रा.सा.एम.एस.जाधव मॅडम ने भी इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में विशेष सहायता तथा मार्गदर्शन किया है। उनके प्रति भी मैं हृदय से आमार प्रकट करता हूँ।

गुरुवर्य प्रा. तिवले सर जी के प्रति भी मैं सहृदय से आमार प्रकट करता हूँ। उनके बारे में मैं इतना ही कहूँगा कि प्रा. तिवले सर मेरे जीवन में एक गुरु के साथ-साथ एक दोस्त की तरह ही मुझे महसूस होते हैं।

मेरे दोस्त मधुकर जगताप का भी मैं आमार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे समय - समय पर आर्थिक सहायता की। मेरे दूसरे साथी डी.ए. जगताप का भी आमारी हूँ, जिन्होंने इस शोध-प्रबन्ध के टक्केबान में सहायता की।

मेरे साथी सुधाकर वाणी, संजय आडके, अनिल सालूखे तथा वाय.बी.घस्ते का भी आभार प्रकट करता हूँ ।

हिन्दुस्थान पेट्रोलियम के मेरे सभी स्टाफ साथी श्री यादव, मुल्ला, विटेकरी, देसाई, कोळी और एस.पी. का भी मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे समय समय पर इस लघु-शोध प्रबन्ध के लिए अवकाश प्राप्त करा दिया और सहकार्य किया ।

मेरे माता-पिता और माई तथा बहनों के आशीर्वाद से मेरा यह कार्य सफल बना ।

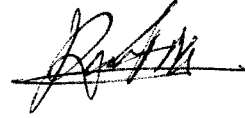
अंत में इस कार्य को सफल बनाने में जिनका सहयोग मिला उन सब का आभार प्रकट करता हूँ और यह लघु-शोध-प्रबन्ध विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

शोध-छात्र

कोल्हापुर ।

(रफोक बंदीवाले)

दिनांक : 23:12:1998 ।



- अ नु क्र म णि का -

		<u>पृष्ठ</u> <u>क्रमांक</u>
प्रथम अध्याय	-- अशक जी का जीवन परिचय	1 से 9
द्वितीय अध्याय	-- अशक जी का कृतित्व	10 से 25
तृतीय अध्याय	-- "शहर में घूमता आईना" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा	26 से 53
चतुर्थ अध्याय	-- "शहर में घूमता आईना" में चरित्र-चित्रण	54 से 106
पंचम अध्याय	-- "शहर में घूमता आईना" औपन्यासिक कला की दृष्टि से	107 से 127
	उपसंहार	128 से 135
	सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची	136 से 137